Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

शिक्षा और आधुनिक शिक्षण प्रणाली का विकास

डॉ0 उपमा चतुर्वेदी

शोधार्थी, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृत एवं पुरातत्व, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

Article Info
Volume 4, Issue 3
Page Number : 272-276
Publication Issue :
May-June-2021
Article History
Accepted : 01 June 2021
Published : 15 June 2021

शोधसारांश– आधुनिक शिक्षा प्रणाली को अपने बौद्धिक, पुस्तकीय ज्ञान के साथ शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक शिक्षा पर भी बल देना चाहिए एवं भारतीय संस्कृति को संजोये रखने हेतु समयानुसार उनमें बदलाव भी करने चाहिए। नहीं तो आधुनिक शिक्षा डिजिटल शिक्षा तक सिमट कर रह जायेंगी।

मुख्य शब्द–शिक्षा, आधुनिक,शिक्षण, बौद्धिक, पुस्तकीय ज्ञान, डिजिटल शिक्षा।

भारत में आधुनिक शिक्षा प्रणाली की शुरूआत ब्रिटिश उपनिवेशवादियों द्वारा वर्ष 1830 में लायी गयी थी। जिसमें शिक्षा के लिए इंग्लिश भाषा को प्रधानता दी गयी है। लार्ड थॉमस मैकाले ने ही भारत की शिक्षा नीतियों में बहुत से बदलाव किये इसलिए उन्हें ही आधुनिक शिक्षा का जनक कहा जाता है।

अंग्रेजी द्वारा भारत में आधुनिक शिक्षा की शुरूआत इसलिए आवश्यक था कि वे प्रशासन की लागत को कम करना चाहते थे क्योंकि इस उददेश्य के लिए पर्याप्त अग्रेंजों को लाना उनके लिए बहुत मंहगा था। इसलिए वे आधुनिक शिक्षा पर जोर देते थे ताकि क्लर्को के लिए शिक्षित भारतीयों की सस्ती आपूर्ति मिल सकें।

गौरतलब है कि हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली आज चिंता एवं चिन्तन का विषय बनी हुई है आधुनिक शिक्षा से पहले यदि वैदिक कालीन शिक्षा पर नजर डाले तो आकाश में घिरी हुई काली बदलियों के बीच से शुभ्र रेखा वाली कोई बिजली कौंध जाती है। वैसे तो सदा से ही शिक्षा मानव निर्माण का सशक्त उपाय रही हैं किन्तु आज विद्यालयों, महाविद्यालयों में जिस प्रकार का उपद्रव देखने को मिलता है उससे निराशा ही हाथ लगती है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

प्राचीन काल में विद्या का उददेश्य मुक्ति प्रदान करना था ''सा विद्या या विमुक्तये'।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इस महत्वपूर्ण बातों को गौर कर दिया गया है। शिक्षा पूर्ण रूप से व्यवसाय बन गयी हैं जो मूल्य चुकाने को तैयार है उसके लिए आवश्यकता, प्रवृत्ति, योग्यता का कोई मापदण्ड नहीं।

मैकाले की शिक्षा प्रणाली पुस्तकीय थी जो हमारे देश के अनुकूल नहीं थी। इस पद्धति ने हमारे देश के विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन से कोसों दूर कर दिया। हालांकि गाँधी जी ने इसे गहराई से अनुभव कर व्यवहारिक, वास्तविक एवं देश के अनुरूप शिक्षा पद्धति के बारे में सोचा, जो कि उनके लेखों, विचारों एवं प्रयोगों से प्रमाणित होता हैं। गाँधी जी के अनुसार मानव जीवन विभिन्न वृत्तियों और शक्तियों का असंबद्ध संग्रह नहीं है वह एक पूर्ण ईकाई है। मानव जीवन के प्रत्येक कार्य, दूसरों के कार्य व्यवहार से संबंधित होता हैं। शिक्षा के क्षेत्र में गाँधी जी की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विरासत उनके जीवन दर्शन का प्राण–तत्व था। उनके लिए शिक्षा मात्र साक्षरता नहीं बल्कि मन शरीर, आत्मा का सम्पूर्ण विकास था। यह शिक्षा शिल्प पर आधारित थी जो उनके अहिंसा के आदर्श के अनुकूल थी। महात्मा गाँधी जी के अनुसार शिल्प शिक्षा लोगों को शोषण, स्वार्थ तथा अनाधिकार ग्रहण से बचायेगी। शिल्प शिक्षा से नये युग का प्रवर्तन होगा। जिसमें जाति एवं साम्प्रदायिक घृणा नहीं रहेगी।

यह शिक्षा सहयोग और समूह भावना का विकास करेगी। प्राचीन काल में भी शिक्षा को जीवन–वृत्ति के तीन स्वरूपों में देखा– ज्ञान, कर्म, शक्ति। ये तीनों एक–दूसरे के सम्पर्क और संसर्ग से जागृत होते रहते है। गाँधी जी के शब्दों में कहे तो 'वर्धा का मारवाडी' विद्यालय जिनका नाम हाल ही में बदलकर 'नवभारत विद्यालय' कर दिया गया है वह अपनी रजत जयंती मनाने जा रहा है। जयंती के साथ–साथ 'हरिजन' ने जिस प्रकार की शिक्षा योजना के प्रतिपादन का प्रयत्न किया वह देश भर के शिक्षा शास्त्रियों को परिषद्' बुलाने पर विवश कर दिया।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली केवल विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास पर बल देती है जबकि उनका ध्यान शारीरिक एवं आध्यात्मिक विकास पर भी दिया जाना चाहिए। इन्हीं आवश्यकताओं पर बल देते हुए श्रीकांत वर्मा जी लिखते है कि–

इतने मकान आस–पास सटे, मगर प्रेम नहीं
सुबह इन मांदो का खुलना

शाम को धीरे–धीरे बंद होना

दिन भर आयं–आयं

यह अर्थ नहीं है भायं–भायं

सहमति नहीं

विश्वास नहीं

एक–दूसरे से मिलने की ललक नहीं।

मानव जन में व्याप्त इन भावना के समूलोत्सर्ग करने की दृष्टि को बदलना ही आधुनिक शिक्षा प्रणाली का विकास होगा।

इसी संदर्भ में विवेकानन्द जी कहते है कि– ''विदेशी भाषा में दूसरों के विचार रट कर अपने मस्तिष्क में उन्हें ठूंसकर और विश्वविद्यालयों की कुछ पद्वीं प्राप्त करके हम अपने को शिक्षित समझते है? क्या यही शिक्षा हैं हमारी शिक्षा का उददेश्य क्या है? मुंशीगिरी करना वकालत करना या छोटा–मोटा अफसर हो जाना किन्तु इससे क्या हमें हमारे देश को कोई लाभ है?''

स्पष्ट है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली जन–समुदाय के जीवन संग्राम के लिए उपयुक्त नहीं बनाती, चारित्रीय शक्ति का विकास नहीं करती, क्षमा का भाव जागृत नहीं करती फिर भी क्या उसे 'शिक्षा' का नाम दिया जाना उचित हैं। हॉ! ऐसा भी है कि कुछ मेधावी छात्र ज्ञानार्जन कर लेते है किन्तु मस्तिष्क उनका भी कोरा ही रहता हैं। यदि विवेक नहीं, संस्कार नहीं तो कोरी अर्थोपार्जक एवं भौतिकता हेतु प्रस्तुत होने वाली शिक्षा से कुछ नहीं होगा। यदि आधुनिक शिक्षा प्रणाली द्वारा सही मायने में विकास करना है तो राष्ट्र के नागरिकों एवं युवाओं को चरित्रवान, मानसिक शक्तियुक्त, सक्षम जीवन जीने हेतु तैयार होगा जैसे कि भारतीय मनीषियों का विचार था कि हंस ही सरस्वती का वाहन बन सकते है, काश नहीं। गीता में श्रीकृष्ण जी कहते है–

श्रद्धावॉल्लभते ज्ञानं तत्परः संमतेन्द्रियः।

ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।।

अर्थात् श्रद्धावान् तत्पर और जितेन्द्रिय पुरूष ज्ञान प्राप्त करता हैं ज्ञान को प्राप्त करके शीघ्र ही वह परम् शान्ति को प्राप्त होता है।

उसी तरह यदि आधुनिक शिक्षा प्रणाली अपने मानदण्डों में मानसिक, शारीरिक और अध्यात्मिक शिक्षा पर बल देती है तो गुणवक्ता अच्छी होगी, तभी भारतीय संस्कृति का ज्ञान अर्थात् वेद लिखने के साधन न होने पर भी वे ज्यों के त्यों सुरक्षित रहेंगे। जिसका सुरक्षित होना नितांत आवश्यक है।

क्योंकि आज कि शिक्षा की यह है कि भारत में एक तरफ निरक्षर लोगों की संख्या 35 करोड़ से ऊपर है तो दूसरी तरफ शिक्षित बेरोजगारों की संख्या भी लगभग 22 करोड़ हैं यह ऑकड़े स्पष्ट करते है कि आज की शिक्षा प्रणाली में असफल तो असफल ही है जो डिग्री लेने में सफल हो जा रहे है उनका विषाद तीन गुना बढ़ जाता हैं क्योंकि एक तरफ उसे मुख्य उद्देश्य रोजगार की प्राप्ति नहीं होती है और दूसरी तरफ वह घर के परम्परागत काम को भी नहीं करता। आज का तथाकथित शिक्षित वर्ग मॉ–बाप–शिक्षक–बुजुर्ग के प्रति अनादर के भावों सेभर गया है तो दूसरी तरफ उसे व्यवस्था या कानून का डर भी नहीं रहा। गौरतलब है कि भारत की शिक्षा व्यवस्था आज राष्ट्रीय चरित्र की समस्या के रूप में देखा जा सकता हैं। यही कारण है कि कुछ तथाकथित धर्मगुरूओं, प्रवचनकर्ताओं द्वारा अलग–अलग स्वरूपों में मानसिक, अध्यात्मिक विकास पर बल दिया है।

आस्था चैनल पर ओशो धारा कार्यक्रम में ओशो प्रिया जी एक दिन देववाणी ध्यान सिखा रही थी। उसमें उन्होंने देववाणी का अर्थ बताया– 'मूलवाणी' क्योंकि 'देव' शब्द 'दिव्' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है 'चमकना'। यानि जो प्रकाशित होता है, स्फुटित होता है। इस अर्थ में पशु पक्षियों की वाणी 'मूलवाणी' है। जबकि देववाणी का अर्थ इसके विपरीत विशिष्ट लोगों की वाणी'। इसी तरह वे सभी लोगों को प्रकृति के शांत वातावरण में गूंजने वाले पशु–पक्षियों की वाणी का ध्यान करा रही थी। इससे सभी में चेतनता का भाव जाग्रत होने लगता है व्यक्ति अधिक संवेदनशील बनने का मार्ग चुनने का अभ्याय करता है वह दूसरों के सुख–दुख से तादाम्य करने लगता है।

जबकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली पुस्तकीय होने के कारण केवल बौद्धिक विकास पर बल देती है। जिसमें शिक्षा शहर के कोलाहलपूर्ण वातावरण में ऊँची कंक्रीट के भवनों में दी जा रही है जिससे विद्यार्थियों का हृदय भी पत्थरनुमा बनता जा रहा है; वह प्रकृति से टूटकर संस्कृति को विकसित नहीं कर पा रहा है उलटे विकृति का शिकार हो गया हैं कोलाहल के परिवेश में ध्वनि प्रदूषण से पशु–पक्षियों की आवाजें बंद हो गयी है सुनाई देना, अब मानव, मानव की चीत्कार भी नहीं सुनना चाहता, वह दिनोदिन अपने परिवेश और प्रकृति के प्रति संवेदनहीन होता जा रहा है। जिसका विकल्प संस्थाओं ने सरकारों ने पाठयक्रम में 'पर्यावरण' विषय जोड़कर पेड़–पौधों के बारे में शाब्दिक शिक्षा दी

जा रही है जो और भी पेड़ों का काटने का कारण बन रही। वर्तमान सरकार इसी तरह 'शारीरिक शिक्षा' को विषय के रूप में पाठयक्रम में शामिल कर कुछ आयोजनों पर पुरस्कृत कर अपना पीठ थपथपा रही है एवं अध्यात्मिक शिक्षा के नाम पर 'मन्दिरों' के नवनिर्माण पर पर बल दे रही है। अतः आधुनिक शिक्षा प्रणाली को अपने बौद्धिक, पुस्तकीय ज्ञान के साथ शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक शिक्षा पर भी बल देना चाहिए एवं भारतीय संस्कृति को संजोये रखने हेतु समयानुसार उनमें बदलाव भी करने चाहिए। नहीं तो आधुनिक शिक्षा डिजिटल शिक्षा तक सिमट कर रह जायेंगी।

संन्दर्भ ग्रंथ

1. भारतीय आधुनिक शिक्षा– प्रथम अंक, जुलाई 2018
2. भारतीय आधुनिक शिक्षा– प्रथम अंक, जुलाई 2014
3. भारतीय शिक्षा–दर्शन– सरयू प्रसाद चौबे, दि मैकमिलन क0 ऑफ इण्डिया दिल्ली 1975
4. गीता– 4/39
5. वैदिक शिक्षा पद्धति– डॉ0 भास्कर मिश्र
6. मूल्य शिक्षा की आवश्यकता– अमित कुमार दबे एवं पूनम दबे।
7. स्वामी विवेकानंद की संक्षिप्त जीवनी तथा उपदेश 'राधाकृष्ण मठ, नागपुर पृष्ठ संख्या 90 (स्थायी, अपूर्वानन्द)।